दिनांक :- 03-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड इतिहास

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
इकाई :- पाँच
पत्र :- एक
अध्याय :- उत्तर वैदिक काल स्त्रोत -

ब्राह्मण - उत्तर वैदिक काल में यज्ञ का अनुष्ठान अत्यधिक बढ़ जाने से ब्राह्मणो की शक्ति में अपार वृद्धि हुई। आरंभ में 16 प्रकार के पुरोहितो में ब्राह्मण केवल एक प्रकार के पुरोहित होते थे किंतु धीरे-धीरे ब्राह्मणों ने यज्ञ विधि के द्वारा सर्वोच्च स्थान ग्रहण कर लिया! ब्राह्मण को वैदिक ग्रंथो में 'अदायी' (दान लेने वाला) तथा सोमपायी एंव इच्छानुसार भ्रमण करने वाला कहा गया है!

क्षत्रिय - इसका शाब्दिक अर्थ होता है क्षेत्र पर अधिकार

करने वाला। उत्तर वैदिक काल में लोहे युद्धास्त्रों के कारण क्षत्रियों की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। क्षत्रिय या राजा भूमि के स्वामी होते थे। वे देश की रक्षा के लिये युद्ध करते तथा प्रजा से कर लेते। ब्राह्मण तथा क्षत्रियों के मध्य आपसी प्रतिस्पर्द्धा भी थी क्योंकि शतपथ ब्राह्मण में एक जगह पर क्षत्रिय को ब्राह्मण से श्रेष्ठ बतलाया गया है। वाजसनेई संहिता, शतपथ ऐतरेय तथा पञ्चविंश ब्राह्मण के अनुसार ब्राह्मण राजन्य से श्रेष्ठ था। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार राजा ब्राह्मण से हटा सकता है। काठक संहिता के अनुसार क्षत्रिय ब्राह्मण से श्रेष्ठ है। इसी प्रतिस्पर्द्धा के कारण कुछ क्षत्रिय विद्वान दार्शनिक राजा बन गए जैसे के उपनिषद काल में श्वेतकेतु आरुणि ने प्रवाहन जैबलि से शिक्षा पाई थी।

वैश्यः- उत्तर वैदिक काल में वैश्य को अनस्य बलिकृत कहा गया है। यह एक मात्र ऐसा वर्ग था जो उत्पादन के साथ कर की अदायगी भी करता था।

शूद्र:- शूद्र वर्ण की चर्चा सर्वप्रथम ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में हुई है। आगे उत्तर वैदिक ग्रंथों में शूद्र उसे कहा गया है जो दूसरों का संदेशवाहक हो। जिसे इच्छा होने पर ताड़न किया जाये तथा जिसे किसी भी समय कार्य करने के लिये बाध्य किया जाए। शूद्रों को तीनों वर्णों का सेवक (अनस्य प्रेष्यस्य) कहा गया है परंतु इस समय तक शूद्र को अस्पृश्य घोषित नहीं किया गया था।

शतपथ ब्राह्मण में शूद्रों द्वारा सोम यज्ञ में भाग लेने की बात की गई है।
मैत्रायिणी संहिता में धनी शूद्रों का जिक्र है। राज्याभिषेक के समय भी शूद्र उपस्थित रहते थे।

वृहदारण्यक तथा छान्दोग्य उपनिषदों में कहा गया है कि 'ब्रह्मलोक में सभी समान माने जाते हैं। अतः चाण्डाल भी यज्ञ का अवशेष पाने का अधिकारी है।

Scanned with CamScanner

विभिन्न शिल्पियों में रथकार की स्थिति सबसे अच्छी थी उन्हें उपनयन का अधिकार था! बच्चे, विधवा इस स्त्री एवं सन्यासी वर्ग व्यवस्था से बाहर थे।

गोत्र

गोत्र की अवधारणा पहली बार उत्तर वैदिक काल में ही आई! गोत्र का शाब्दिक अर्थ गोष्ठ होता है अर्थात् वह स्थान जहाँ पूरे गोत्र का गोधन रखा जाता था। परंतु यह अर्थ कुछ समय के बाद बदल गया! अब एक ही मूल पुरुष से उत्पन्न व्यक्ति एक गोत्र के कहे जाने लगे! प्रारंभ में गोत्र की अवधारणा ब्राह्मणों के लिये थी ब्राह्मणों के द्वारा ही क्षत्रिय और वैश्य को प्रदान किये गये! मौलिक रूप से सात गोत्र माने जाते हैं जो विभिन्न ऋषियों के नाम पर है-यथा - कश्यप, वशिष्ठ, भृगु गौतम, भारद्वाज, अत्रि तथा विश्वामित्र आठवाँ गोत्र अगस्त्य ऋषि का माना जाता है वे अनार्यों के ऋषि भी माने जाते हैं।

प्रवरः- आगे चलकर केवल एक ही मूल पुरुष से उत्पन्न व्यक्ति

Scanned with CamScanner

की ही गणना नही की जाती थी वरन् उस मूल पुरुष के पूर्वजों को भी ध्यान में रखा जाता था। सपिंड, सगोत्र आदि शब्दो पर विचार सूत्रकाल में होने लगा और इसी के साथ गोत्र बहिर्गमन की परिकल्पना आई।

गृह परिवार – उत्तरवैदिक परिवार पितृ सत्तात्मक था। पिता परिवार का प्रमुख होता था। इस काल मे परिवार के मुखिया के अधिकारो मे वृद्धि हुई। उदाहरण के लिये ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार अजीगत ने अपने पुत्र शुनः शेप को 100 गायो के बदले में बेच दिया तथा विश्वामित्र ने आज्ञा का उल्लंघन करने पर अपने 50 पुत्रो को घर से बाहर कर दिया वैसे संपत्ति पर पुत्रो का अधिकार होता था।

नारी की स्थिति :- वैदिक काल की तुलना में इस काल मे गिरावट आई। अब सभा और समिति मे उनके प्रवेश का अधिकार नही रहा। पुत्री की तुलना में इस काल में उन्हे

Scanned with CamScanner

संपत्ति से भी वंचित किया गया। साथ ही पुत्रियों के जन्म को हतोत्साहित किया गया।

ऐतरेय ब्राह्मण में लड़कों को परिवार का रक्षक तथा पुत्रियों को दुःख का कारण माना गया है।

मैत्रायिणी संहिता में स्त्रियों की तुलना मदिरा, विष, और पाशा से की गई है। बृहदारण्यक उपनिषद में प्रसिद्ध याज्ञवल्क्य एवं गार्गी की कथा है जिनमें याज्ञवल्क्य गार्गी को वाद-विवाद में डांट कर चुप करा देते हैं।

फिर भी सूत्रकाल की तुलना में स्त्रियों की स्थिति अच्छी ही थी। इस काल में मैत्रेयी तथा गार्गी परम विदूषी महिलायें थीं। इस काल में स्त्रियाँ ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन करते हुए शिक्षा ग्रहण करती थीं। यजुर्वेद में शिक्षित स्त्री एवं पुरुष के विवाह को ही उपयुक्त माना गया है।

अथर्ववेद के अनुसार स्त्री के चार पति हैं - (1) सोम (2) अग्नि

(3) गंधर्व (4) वास्तविक पति। प्रथम अवस्था उसके सौंदर्य, शील और संस्कृति के विकास की अवस्था है। द्वितीय अवस्था में कन्या में चारित्रिक भावना का विकास होता था। तृतीय अवस्था में उसे नृत्य संगीत तथा अन्य ललित कलाओं में शिक्षा दी जाती है जिससे उसे चौथी अवस्था में वास्तविक पति के साथ सांमजस्य में कठिनाई न हो। इस विभाजन का सांकेतिक महत्व यह है कि स्त्रियों की शारीरिक एवं सांस्कृतिक विकास की चार अवस्थायें हैं। वृहदारण्यक उपनिषद में विदुषी पुत्री के जन्म की कामना करने वाले व्यक्ति के लिए एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान की व्यवस्था मिलती है

विवाह - उत्तर वैदिक आर्यों में विवाह एक प्रतिष्ठित संस्था थी। विवाह एक आवश्यक कर्त्तव्य था। अविवाहित व्यक्ति को यज्ञादि करने का अधिकार प्राप्त नहीं था।

Scanned with CamScanner